



पाठ 3 बस की यात्रा

- हरिशंकर परसाई

पृष्ठ संख्या: 17

प्रश्न अभ्यास

कारण बताएं

1. "मैंने उस कंपनी के हिस्सेदार की तरफ पहली बार श्रद्धाभाव से देखा।"

• लेखक के मन में हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा क्यों जग गई ?

उत्तर

लेखक के मन में बस कंपनी के हिस्सेदार साहब के लिए श्रद्धा इसलिए जाग गई कि वह इतनी खटारा बस को चलाने का साहस जुटा रहा था। कंपनी का हिस्सेदार अपनी पुरानी बस की खूब तारीफ़ कर रहा था। ऐसे व्यक्ति के प्रति श्रद्धा भाव ही उमड़ता है।

2. "लोगों ने सलाह दी कि समझदार आदमी इस शाम वाली बस से सफ़र नहीं करते।"

• लोगों ने यह सलाह क्यों दी ?

उत्तर

लोगों ने लेखक को यह सलाह इसलिए दी क्योंकि इस बस का कोई भरोसा नहीं है कि यह कब और कहाँ रुक जाए, शाम बीतते ही रात हो जाती है और रात रास्ते में कहाँ बितानी पड़ जाए, कुछ पता नहीं रहता। उनके अनुसार यह बस डाकिन की तरह है।

3. "ऐसा जैसे सारी बस ही इंजन है और हम इंजन के भीतर बैठे हैं।"

• लेखक को ऐसा क्यों लगा ?

उत्तर

जब बस का इंजन स्टार्ट हुआ तब सारी बस झनझनाने लगी। लेखक को ऐसा प्रतीत हुआ कि पूरी बस ही इंजन है। मानो वह बस के भीतर न बैठकर इंजन के भीतर बैठा हुआ हो।

4. "ग़ज़ब हो गया। ऐसी बस अपने आप चलती है।"

• लेखक को यह सुनकर हैरानी क्यों हुई?

उत्तर

लेखक को बस की स्थिति देखकर लग रहा था की बस नहीं चल पाएगी परन्तु जब उसने बस के हिस्सेदार से पूछा तो उसने कहा चलेगी ही नहीं, अपने आप चलेगी। एक तो खास्ता-हालत बस ऊपर से अपने आप आप इस कारण लेखक को हैरानी हुई।

5. "मैं हर पेड़ को अपना दुश्मन समझ रहा था।"

• लेखक पेड़ों को अपना दुश्मन क्यों समझ था ?

उत्तर

लेखक को पेड़ों से डर लग रहा था कि कहीं उसकी बस किसी पेड़ से टकरा न जाए। एक पेड़ निकल जाने पर वह दूसरा पेड़ का इंतज़ार करता था कि बस कहीं इस पेड़ से न टकरा जाए। यही वजह है कि लेखक को हर पेड़ अपना दुश्मन लग रहा था।

पाठ से आगे

1. 'सविनय अवज्ञा आंदोलन' किसके नेतृत्व में, किस उद्देश्य से तथा कब हुआ था? इतिहास की उपलब्ध पुस्तकों आधार पर लिखिए।

उत्तर

'सविनय अवज्ञा आंदोलन' गांधीजी के नेतृत्व में, भारत को पूर्ण स्वाधीनता दिलाने के लिए 1930 ई. में हुआ था।

*****END*****